International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 13-12-2020; Accepted: 28-12-2020; Published: 23-01-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 33-36

महात्मा गॉधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, एवं श्री अरविन्द, के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिपेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन

गौरव कुमार मिश्रा[1], डा0 अनीता चौहान[2], शशिबाला[2]

[1] एम0 एड0 विद्यार्थी, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाविभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वर्तमान समाज में अनेक विसंगतियां व्याप्त हैं। जिनके कारण हमारा सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास नहीं हो पा रहा है। मूल्य एवं नैतिकता का ह्रास हो रहा है। शिक्षा की संख्यात्मक वृद्धि तो हुई है परन्तु गुणात्मक वृद्धि नहीं हो रही है। ऐसे समय में हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो हमारा सर्वांगीण विकास कर सके। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए महात्मा गॉधी, रविन्द्रनाथ टैगोर एवं श्री अरविन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया और अध्ययन के उपरान्त यह शोध पत्र तैयार किया गया है। अध्ययन में पाया गया है कि शिक्षा मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों का अन्त करके व्यक्ति को समाजोपयोगी नागरिक बनाती है। हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति का सर्वांगण विकास कर सके, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सर्वोत्तम विकास करके समाज को भी सहयोग देता है और राष्ट्र की प्रगति का आधार भी बनता है। वर्तमान समय में शिक्षा एवं समाज में अनेक समस्याएं हैं जिनका समाधान गॉधी, टैगोर, अरविन्द के विचारों को अपनाकर किया जा सकता हैं। शोधार्थी ने अनुभव किया कि इन तीनों विचारकों के विचारों के बिना शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय पर विचार करना असम्भव है। शोधार्थी का ऐसा मानना है कि यदि इन तीनों विचारकों के विचारों को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्थान दिया जाता है तो निःसन्देह हमारे समाज में व्याप्त विसंगतियों को काफी हद तक दूर किया जा सकता है।

कूट शब्दः शैक्षिक विचारों, सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास

प्रस्तावना

यदि कभी कर्तव्य के निर्णय करने में या सदाचार के निर्णय करने के विषय में कोई शंका हो जाए तो ऐसी स्थिति में जो उत्तम विचार वाले उचित परामर्श देने में दक्ष, सत्कर्म और सदाचार में संलग्न स्नेह पूर्ण स्वभाव वाले तथा धर्मपालन की इच्छा रखने वाले विद्वान पुरूषों के आचरण को देख कर ही आचरण करना चाहिए। हम और आप सर्वाधिक भागयशाली हैं जिन्हें संसार के सर्वोच्च विचारों की भूमि में जन्म लेने का अवसर मिला है। हम और आप चाहें तो सदविचारों के सम्पर्क में आकर अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। सत्संगति का अर्थ केवल सज्जन व्यक्ति के पास बैठना नहीं है, वरन इसका अर्थ है– विचारशील एवं गुणवान व्यक्ति के विचारों के सम्पर्क में आना। सत्संगति मनुष्य के जीवन में सौभाग्य का द्वार खोल देती है सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम के द्वार की भी कुंजी है। महान शिक्षाशास्त्री के विचारों के सम्पर्क में आने का जो आनन्द मिलता है, उसकी अनुभूति का अवसर विरलों को ही प्राप्त है। प्राचीनकाल से ही हमारी ''रत्न प्रसवनी भारत भूमि'' शिक्षा एवं संस्कृति की धरोहर रही है। भारत एक विशाल एवं विभिन्नताओं वाला देश है। विभिन्न प्रकार की जातियों, भाषा भाषियों वाले इस विशाल भू–भाग भारत की संस्कृति में विभिन्नता है उसमें एकता एवं समन्वय की भावना उत्पन्न करने वाला एक ही बिन्दु है, और वह है ''शिक्षा'' शिक्षा को युगों में बॉटा जा सकता है जैसे वैदिककालीन शिक्षा, मध्यकालीन शिक्षा, ब्रिटिशकालीन शिक्षा एवं स्वतन्त्रता के पश्चात (आधुनिक कालीन) शिक्षा। प्राचीन काल से ही भारत को जगतगुरू की संज्ञा दी जाती है क्योंकि उस समय भारतीय शिक्षा का स्तर विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत ऊॅचा था। शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख लक्ष्य उच्च आदर्श, धर्म, दर्शन का विशेष ज्ञान एवं चरित्र निर्माण था। मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में सभी के लिए शिक्षा का अभाव था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मात्र लिपिक तैयार करना था किन्तु भारतीय धरती ऐसी रही है जिस पर सिद्ध पुरूषों और युग निर्माताओं की कमी नहीं रही है इस श्रंखला में श्री अरविन्द, रविन्द्र नाथ टैगोर एवं महात्मा गॉधी आदि जैसे महान विचारक हुए जिन्होंने तत्कालीन समाज एवं शैक्षिक स्थिति को अपने विचारों से प्रभावित किया है।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

यदि आज हम वर्तमान शैक्षिक जगत की बात करें तो कहीं न कहीं हमने अपने चरित्र का मूल्यों का, नैतिकता का, राष्ट्रीयएकता की भावनाओं का विश्वबन्धुत्व की भावनाओं का और अपने ज्ञान आदि का ह्रास तो किया ही है साथ ही गलत शैक्षिक नीतियों के कारण शिक्षा की संख्यात्मक वृद्धि तो हुई है परन्तु गुणात्मक रूप से हम कहीं ज्यादा पीछे चले गये हैं अतः ऐसे समय में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो मानवता, आत्मानुभूति, चरित्र निर्माण, नैतिकता का विकास, जीविकोपार्जन राष्ट्रीय एकता अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव, मानसिक शान्ति, विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास में सहायक हो अरविन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर एवं महात्मा गॉधी के शैक्षिक विचार ऐसी ही शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है इसलिए आज इनके शैक्षिक विचारों पर आधारित शिक्षा की आवश्यकता है।

आज का युवा मानसिक उलझनों में भागदौड़ भरी जिन्दगी में तनाव का शिकार हो रहा है ऐसी अवस्था में श्री अरविन्द की योग पर आधारित शिक्षा महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। वर्तमान युग में भ्रष्टाचार, एक दूसरे के प्रति भेदभाव की भावना फैली हुई है ऐसी स्थिति में रविन्द्रनाथ टैगोर की सम्पूर्ण मानवता आधारित शिक्षा अत्यन्त उपयोगी होगी। वर्तमान समय में बेरोजगारी की विकट समस्या है उसकी पूर्ति हेतु महात्मा गॉधी की उद्योग केन्द्रित शिक्षा महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः राम (2008) प्राथमिक शिक्षा पर महात्मा गॉधी के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि बुनियादी शिक्षा सर्वोदय दर्शन गीता पर आधारित है धार्मिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ देना

चाहए। वे पुस्तकीय ज्ञान के पक्षधर नहीं थे।
गिरिजा (2003) ''गॉधी दर्शन एक समग्र मूल्यांकन नामक अध्ययन में इन्होंने निष्कर्ष निकाला कि गॉधी जी के शिक्षा दर्शन को अपनाकर हम वर्तमान परिस्थितियों में सर्वांगीण एवं संतुलित विकास कर अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं।
प्रवेश (2002) ने गॉधी, टैगोर, अरविन्द एवं विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन में आदर्शवाद प्रवृतियों का अध्ययन नामक शीर्षक का अध्ययन किया। इन चारों विचारको का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष निकाला कि वैसे तो इन विचारकों ने अन्य वादों को भी अपनाया लेकिन विशेष रूप से इन चारों दार्शनिकों ने आदर्शवाद को अपनाया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. महात्मा गॉधी, रविन्द्रनाथ टैगोर एवं श्री अरविन्द के जीवन तथा शिक्षा दर्शन से सामान्य परिचय स्थापित करना।
2. महात्मा गॉधी, रविन्द्रनाथ टैगोर तथा श्री अरविन्द के शिक्षा समबन्धी अनेक विचार उनके द्वारा रचित पुस्तकों एवं शिक्षा से समबन्धित अन्य पुस्तकों में यत्र तत्र विखरे हुए हैं उन विचारों को एकत्र करके शिक्षा के सूत्र में बांधना एवं समीक्षा करना।
3. महात्मा गॉधी, रविन्द्र नाथ टैगोर एवं श्री अरविन्द द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यक्रम शिक्षण विधियॉ, गुरू–शिष्य सम्बन्ध, विद्यालय व्यवस्था एवं अनुशासन आदि का अध्ययन करना।
4. शिक्षा के उन आधारों को खोजना जो इन विचारकों को विश्व के महान शिक्षाशास्त्रियों की श्रेणी में लाकर खड़ा करते हैं।
5. महात्मा गॉधी जी, रविन्द्र नाथ टैगोर एवं श्री अरविन्द के शिक्षा से सम्बन्धित विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के दोषों को ज्ञात करना।
7. वर्तमान, शिक्षा प्रणाली के लिए महात्मा गॉधी, टैगोर जी एवं श्री अरविन्द के विचारों के ग्रहणीय तत्वों को प्रस्तुत करना।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध महात्मा गॉधी, रविन्द्र नाथ टैगोर एवं श्री अरविन्द द्वारा प्रस्तुत शिक्षा का अर्थ, जीवन दर्शन, उनके आधारभूत सिद्धान्तों, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, गुरू–शिष्य सम्बन्ध, धार्मिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में उनेक द्वारा दिये गये विचारों के तुलनात्मक अध्ययन और उनके विचारों की वर्तमान में सार्थकता तक सीमित है।

अध्ययन के स्रोत

अध्ययन के स्रोत के रूप में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में उनकी स्वलिखित पुस्तकें है। यथा– रविन्द्रनाथ टैगोर जी की आइडियल्स ऑफ एजूकेशन माई एजूकेशनल मिशन टू दि नेशन एज सिस्टम ऑफ एजूकेशन ऑन एजूकेशन, द लाईफ डिवाइन महात्मा गॉधी की टूवार्डस न्यू एजूकेशन, बेसिक एजूकेशन, सत्य के साथ मेरे प्रयोग आदि। द्वितीयक स्रोत के रूप में इन पर लिखे हुए शोध पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें तथा अन्य शोध कार्य आदि का प्रयोग किया गया है। उपयुक्त स्रोतों के आधार पर यह शोधकार्य पूर्ण किया गया है क्योंकि यह शोध कार्य पूरी तरह से सैद्धान्तिक है इसलिए इस शोध कार्य में विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

''महात्मा गॉधी, रविन्द्र नाथ टैगोर एवं श्री अरविन्द जी'' के जीवन दर्शन एवं शैक्षिक विचार

गॉधी जी के शिक्षा दर्शन का उनके जीवन दर्शन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। गॉधी जी का मत है कि सत्य अहिंसा, सेवा निर्भयता आदि जीवन के ऐसे उद्देश्य हैं जिनकी प्राप्ति केवल शिक्षा के द्वारा ही सम्भव हो सकती है। उन्होंने कहा कि आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का एक मात्र आधार शिक्षा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि गाधी जी का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन का गतिशील पक्ष है उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार मूल रूप से प्राचीन भारतीय विचारों पर आधारित है, परन्तु उन पर पाश्चात्य शिक्षा दार्शनिकों के आधुनिक सिद्धान्तों का भी प्रभाव पड़ा है। गॉधी जी के शिक्षा दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद तथा प्रयोजनवाद का अदभुत समन्वय पाया जाता है। डा0 पटेल ने ठीक ही लिखा है ''गॉधी जी का शैक्षिक दर्शन निर्माण की दृष्टि से प्रकृतिवादी उद्देश्य की दृष्टि से आदर्शवादी और शिक्षण विधि की दृष्टि से प्रयोजनवादी है।'' गॉधी जी ने आदर्शवादियों के शिक्षा के उद्देश्यों का समर्थन करते हुए बालकों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक धार्मिक, चारित्रिक तथा सौन्दर्यात्मक सभी प्रकार के संतुलित विकास पर बल दिया है। जिससे बालक अपने लक्ष्य आत्मानुभूति को प्राप्त कर सकें। प्रकृतिवादियों की तरह उन्होंने बालक की मूल प्रवृतियों, रूचियों और झुकावों की ओर ध्यान देने को कहा है। तथा क्रिया द्वारा शिक्षा देने पर बल दिया हे। वे प्रयोजनवादियों की तरह वैज्ञानिक ज्ञान को कौशल के साथ प्रदान करना चाहते थे और यह ज्ञान एक प्रकार से प्रयोगों द्वारा ही जाए। क्योकि गॉधी जी ने कहा है कि शिक्षा जीवन से सम्बन्धित होनी चाहिए। 1937 में वर्धा में गॉधी जी ने बेसिक शिक्षा की रूपरेखा भी प्रस्तुत की जिसका उद्देश्य उद्योग या दस्तकारी के माध्यम से बालक के मस्तिष्क को सुन्दर बनाना था।
रविन्द्र नाथ टैगोर के जीवन दर्शन पर उनके धार्मिक दर्शनयुक्त तथा सांस्कृतिक परिवार का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने आदर्शवादी दर्शन को अपनाया तथा सत्य् शिवम् सुन्दरम् में प्रबल विश्वास करते हुए आध्यात्मिकता को प्राप्त करना मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य माना। उन्होंने मनुष्य और प्रकृति के सामंजस्य पर बल दिया। वे मानव को सम्मान तथा स्वतन्त्रता दिलाकर उसकी आत्मा को ऊॅचा उठाना चाहते थे जिसके लिए मानसिक तथा नैतिक प्रगति आवश्यक है, इसलिए उन्होंने मानसिक तथा नैतिक प्रगति को प्रमुख स्थान दिया। वे दार्शनिक, समाज सुधारक तथा राष्ट्रवादी भी थे। टैगोर का विश्वास था कि प्रकृति, मानव तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में परस्पर मेल एवं प्रेम है। अतः सच्ची शिक्षा के द्वारा वर्तमान की सभी वस्तुओं में मेल और प्रेम की भावना विकसित होनी चाहिए। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतन्त्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है। टैगोर प्रकृति को बालक की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन मानते थे और उनका मानना था कि शिक्षा प्राकृतिक विधियों द्वारा प्राकृतिक वातवरण में प्रसन्नता और आनन्द के साथ प्रदान की जानी चाहिए। टैगोर ने शिक्षा को समाज जीवनदायी धारा माना तथा समाज सेवा का साधन माना किन्तु टैगोर विश्व बन्धुत्व में विश्वास करते थे अतः उन्होंने समाज का तात्पर्य विश्व समाज माना इसलिए बालकों में विश्व बन्धुत्व और भाईचारे की भावना उत्पन्न करनी चाहिए। टैगोर ने कहा कि भ्रमण के समय पढ़ाना शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है। टैगोर ने अपनी शिक्षा योजना में शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वे बालक को दैवीय प्रकाश युक्त मानते थे और बालक में कुछ आवश्यक गुणों की अपेक्षा करते थे। जैसे– व्यवहार में विनम्रता, आचरण में शुद्धता, जीवन में अनुशासन स्वतन्त्र चिन्तन उच्च अभिलाषा, ब्रहम्चर्य, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि। इस प्रकार वे बालक के व्यक्तित्व का समन्वित विकास करना चाहते थे।
श्री अरविन्द आदर्शवादी थे। उनके दर्शन का आधार उपनिषद थे वे जीवन में आध्यात्मिक साधना योग तथा ब्रहमचर्य को विशेष

महत्व देते हुए विकास के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। उन्होंने बताया विकास का लक्ष्य केवल एक ही है और वह संसार में व्यापक दिव्य शक्ति अथवा पूर्ण एवं अखण्ड चेतना को प्राप्त करना। अरविन्द का वेद, गीता, योग में पूर्ण विश्वास था उन्होंने मानव को ईश्वर की सर्वोत्तम सृष्टि माना है और योग व्यक्तियों में छिपी शक्तियों का विकास करता है। श्री अरविन्द एक महान दार्शनिक के साथ–साथ उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री भी थे, उन्होंने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों को अपने साप्ताहिक कर्मयोगिन में प्रकाशित किया और बताया कि शिक्षक का प्रमुख उपकरण अन्तःकरण होता है। इस अन्तःकरण के चार स्तर हैं– चित्त मनस, बुद्धि, ज्ञान। शिक्षा को बालक के चारों स्तरों का अधिक से अधिक विकास करना चाहिए। उन्होंने स्वयं लिखा है– ''सच्ची और वास्तविक शिक्षा वह है जो मानव की अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करके उसे सफल बनाने में सहायता प्रदान करती है'' वे बालक प्रधान शिक्षा के पक्ष में थे और शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा होना चाहिए। श्री अरविन्द भारत की प्रचलित शिक्षा के विरोधी थे उनका कहना था कि स्वतन्त्रता के बाद भी शिक्षा बालकों के मस्तिष्क आत्मा तथा चरित्र एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं है। उनका कहना था कि ''सच्ची शिक्षा को मशीन से बना सूत नहीं होना चाहिए, अपितु इसको मानव के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण अथवा जीवित उत्कर्ष करना चाहिए। श्री अरविन्द ने अपनी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को निर्देशक, पथ प्रदर्शक और सहायक के रूप में स्थान दिया। अरविन्द प्रभाववादी एवं मुक्तिवादी अनुशासन के पक्ष में थे उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम रोचक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं क्रियाशील को बढ़ावा देने वाला तथा रूचिकारक और बालक का पूर्ण विकास करने वाला होना चाहिए।

व्याख्या एवं विष्लेषण

महात्मा गॉधी जी ने शिक्षा का अर्थ बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास से लगाया है उन्होंने कहा है कि शिक्षा का अर्थ है पूर्ण मानव का विकास करना। मानव का अर्थ व्यक्तित्व के चारों तत्वों अर्थात शरीर, हृदय तथा मन के सर्वोत्तम विकास से है। रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमें ज्ञान ही प्रदान न करे अपितु हमारा सम्पूर्ण विश्व एवं प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें। श्री अरविन्द ऐसी शिक्षा के पक्ष में थे जो बालकों को कर्मठ बनायें तथा आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में समर्थ हो इस प्रकार शिक्षा के सम्बन्ध में तीनों विचारकों के अपने–अपने मत हैं– किन्तु तीनों ने ही बालक के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता प्रदान की है।

शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्तः गॉधी जी ने शिक्षा के आधारों में हस्तकला को महत्व, बेरोजगारी से सुरक्षा, शिक्षा का मध्यम मातृभाषा एवं स्वावलम्बी शिक्षा को महत्व दिया है। रविन्द्रनाथ टैगोर ने प्रकृति की गोद में शिक्षा एवं अन्तराष्ट्रीयता की शिक्षा को महत्व दिया है। श्री अरविन्द ने शिक्षा के आधारों में कहा है कि शिक्षा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों के अनुसार होनी चाहिए। तथा मानव के अन्तःकरण का विकास एवं योग के माध्यम से शिक्षा पर बल दिया है।

शिक्षा के उद्देश्यः गॉधी जी ने शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में बॉटा है तत्कालिक उद्देश्य एवं सर्वोच्च उद्देश्य। इन्हें जीविकोपार्जन, चारित्रिक विकास एवं वास्तविकता को अनुभव के रूप में प्रस्तुत किये हैं। रविन्द्र नाथ टैगोर ने शिक्षा के उद्देश्यों में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास एवं अन्तराष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास को महत्व दिया है। श्री अरविन्द ने स्वं के ज्ञान को शिक्षा के उद्देश्यों में स्थान दिया है।

पाठ्यक्रमः गॉधी जी ने हस्तशिल्प रविन्द्रनाथ टैगोर ने नाटक, नृत्य, कविता, अरविन्द ने विश्व एकीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को पाठ्यक्रम में महत्व दिया है।

शिक्षण पद्धतिः महात्मा गॉधी ने रचनात्मक कार्यों द्वारा सीखने पर बल दिया है। रविन्द्रनाथ टैगोर ने प्रत्यक्ष विधि एवं श्री अरविन्द ने स्वअनुभव शिक्षण विधि को महत्व दिया है।

शिक्षकः गॉधी जी टैगोर एवं श्री अरविन्द ने शिक्षा योजना में शिक्षा को अत्याधिक महत्व दिया है। इन्होंने शिक्षक को मित्र पथ प्रदर्शक, सहायक, एवं निर्देशक के रूप में स्थान दिया है।

बालकः गॉधी जी ने बालक को अनुशासित विनयी होने की बात कही है तथा टैगोर एवं अरविन्द ने बालक को दैवीय प्रकाश युक्त माना है।

अनुशासनः सभी ने आत्मानुशासन, स्वभाविक अनुशासन एवं आन्तरिक अनुशासन को महत्व दिया है।

विद्यालयः गॉधी जी ने विद्यालयों को सामुदायिक केन्द्रों के रूप में व्यवस्थित करने की बात कही है। टैगोर ने गुरूकुलों की भॉति विद्यालयों को महत्व दिया है। अरविन्द बालकों को किसी प्रकार के बन्धन में बॉधना नहीं चाहते थे।

महात्मा गॉधी, रविन्द्रनाथ टैगोर एवं श्री अरविन्द के षैक्षिक विचारों की वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिता एवं निष्कर्ष

विचारधारा मूल्य और शिक्षा का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। वास्तव में देश की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है। कि हमारे नागरिकों ने क्या और कैसी शिक्षा प्राप्त की है तथा किन मूल्यों को अर्जित किया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भौतिकवादिता बढ़ गई है छात्र अनुशासनहीन अशिष्ट और विध्वंसात्मक होकर तोड़ फोड़ में संलग्न हैं वर्तमान समय में अनुशासन की समस्या विकट रूप में उपस्थित है। अतः अनुशासनहीनता से निपटने में हमारे तीनों विचारकों के विचार उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था की दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली है आज रटने की शिक्षा पर बल दिया जाता है जबकि टैगोर कहते थे कि बालकों को रटने के लिए बाध्य नहीं किया जाये। यथा सम्भव शिक्षण विधि जिसका आधार जीवन प्रकृति और समाज की वास्तविक परिस्थितियां हों अपनानी चाहिए। इस प्रकार यदि हम अपने तीनों विचारकों के विचारों को अमल में लाये तो काफी हद तक इस समस्या का अन्त हो सकता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में टैगोर और अरविन्द ने अपनी शिक्षा व्यवस्था में एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया जो व्यक्ति के जीवन से जुड़ा हुआ है जिसको वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान दिया जा सकता है। जो व्यक्ति के जीविकोपार्जन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। बालकों को अमनोवैज्ञानिक विधियों के द्वारा पढ़ाना उचित नहीं है। आज के युग में शिक्षकों को इन विधियों को त्यागकर बालकेन्द्रित विधियों को अपनाने की आवश्यकता है। जिससे बालकों को अच्छी प्रकार से बोध हो जाए अतः आज समाज में अनेक प्रकार की समस्याएं हैं जैसे– चरित्रहीनता, कुंठित मानसिक एवं शारीरिक विकास शोषण अराजकता नैतिकता का पतन समाज विद्रोही व्यवहार, मूल्यहीनता, संयुक्त परिवारों का टूटना, सम्बन्धों में भौतिकवादिता आना इत्यादि ऐसी समस्याएं हैं जो हमारे सामने प्रबल रूप में विद्यमान हैं। अतः गॉधी टैगोर एवं श्री अरविन्द का यह समन्वयकारी दर्शन वर्तमान परिपेक्ष्य में महत्वपूर्ण हो सकता है। कह सकते हैं कि इन तीनों के विचार वर्तमान में सार्थक एवं प्रासंगिक सिद्ध हो सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. डी0राम (2008) प्राथमिक शिक्षा पर महात्मा गॉधी जी के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध शिक्षा संकाय, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
2. सिंह गिरिजा कान्त (2003) गॉधी दर्शन एक समग्र मूल्यांकन लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
3. मिश्रा, प्रवेश कुमार (2002) गॉधी, टैगोर, अरविन्द एवं विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन आदर्शवादी प्रवृत्तियों का अध्ययन लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
4. मराल, गार्गी शरण मिश्र (2003) शिक्षा की समस्याएं और समाधान प्रथम संस्करण कानपुर विकास प्रकाशन।
5. मित्तल एम0एल0 (2007) उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षा मेरठ इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस 169.185